॥ ओ३म् ॥

आर्य (हिन्दू) जाति ... के मार्ग पर

लेखक और प्रकाशक :

चतुरसेन गुप्त

आपकी सेवा में......बिना आपकी आज्ञा के भेज रहा हूँ आशा है आप इसे पसन्द करेंगे और प्रचार करने के लिए भारी संख्या में मंगवायेंगे।

अब जितनी प्रति आपको मिलें, २५ पैसे प्रति पुस्तक के हिसाब से मनिआर्डर द्वारा भेज कर कृतार्थ करें। आशा है आप मुझे पैसे मंगाने के लिए पत्र नहीं लिखने देंगे। यदि ना-पसंद हो तो, मेरे खर्चे पर वापिस भेज देंगे।

—चतुरसेन

मिलने का पता :

आर्य व्यवहार प्रकाशन

पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली-६

प्रथमवार १० हजार

मूल्य २५ पैसे

॥ ओ३म् ॥

महान आर्य (हिन्दू) जाति—मृत्यु के मार्ग पर

भूतकाल

इसे कौन कह सकता है कि आर्य जाति का भूतकाल महान् नहीं था। आर्य जाति की दिग्विजय यात्रा भारत की सीमाओं में ही नहीं, भारत से वाहर चारों दिशाओं में थी।

स्याम की राजधानी का नाम अयुथ्या (अयुध्या) रखा गया, स्याम के राजा के नाम के साथ राम आज तक लगा आ रहा है। स्पेन की संसद के वाहर दो विशाल मूर्तियें हैं जिनमें से एक आर्य जाति के आद्य न्यायमूर्ति भगवान मनु की है।

इन्डोनेशिया में बाली टापू है जो रामायण से सम्बन्धित है। सारे राष्ट्र में रामायण और महाभारत की कथा और चित्रकला दीवारों पर अंकित है।

इसी प्रकार अन्य राष्ट्रों में जाईये, आर्य जाति की महानता का कोई न कोई चिह्न अवश्य मिलेगा।

आर्य साहित्य

आर्य जाति के महर्षियों की रचनाओं का बगदाद के खलीफाओं ने अपनी भाषाओं में अनुवाद कराये थे। हमारे आयुर्वेद के महान् ग्रन्थ जिनका नाम चरक और सुश्रुत है उनके अनुवाद बगदाद के शासक हाँरूँ रशीद ने करवाये जिनके नाम आज भी वहाँ की भाषा में चरक का "सरक" और सुश्रुत का "सुसरो है।

यही नहीं भारत के प्राचीन राजनीतिज्ञ आचार्य विष्णुशर्मा का विश्व-विख्यात ग्रन्थ पंचतन्त्र संसार की सभी भाषाओं में अनुदित हुआ। अमरीका में पंचतन्त्र का प्रकाशन भारी संख्या में हुआ। अमरीका में अंग्रेजी में ही नहीं—

संस्कृत में भी प्रकाशित किया। इसी ग्रन्थ पर एक विद्वतापूर्ण टिप्पणी ग्रन्थ भी अमरीका ने प्रकाशित कराया।

फारसी में कलेला दमन पंचतन्त्र का ही अनुवाद है। कश्मीरी संस्कृतज्ञ विद्वान् ने राजनीति पर "कथा सरित सागर" नामक महान् ग्रन्थ लिखा। जिसे लन्दन वालों ने अंग्रेजी अनुवाद करके १० जिल्दों में प्रकाशित किया। आचार्य चाणक्य का महान ग्रन्थ "कौटिल्य अर्थशास्त्र" भारत से भी पहले जर्मनी में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। जर्मनी विद्वान् मैक्समूलर ने तो यजुर्वेद का मूल संस्करण बहुत ही सुन्दर प्रकाशित किया था तथा वेदों के अंग्रेजी में भाष्य भी किये थे। मुसलिम काल का शहज़ादा दाराशिकोह उपनिषदों का भारी भक्त था।

भारत पर दूसरा हमलावर मुहम्मद बिनकासिम के एक विद्वान साथी ने— जिसका नाम अलबरूनी था—आर्य जाति के महान् ग्रन्थ महाभारत गीता बाल्मीक रामायण, योगदर्शन और ज्योतिषाचार्य, भास्कराचार्य के ग्रन्थ पढ़कर भारी आश्चर्य के साथ कहा था कि जिस आर्य जाति के पास महाभारत और रामायण जैसे महान् ग्रन्थ हैं वह मुठ्ठी भर विदेशियों से कैसे पद दलित होती रहती है।

१ से १० तक

१ से १० तक के अंकों की निर्माता आर्य जाति ही है। भारत से ही अरब में यह अंक ले जाये गए और अरब से यूरोप में। आज भी आप भारत भर में किसी भी उर्दू के मास्टर से पूछ कर देखें—इन अंकों का नाम "हिन्दसा" बतावेगा। उर्दू के पहाड़ों पर यह "हिन्दसा" ही छपा मिलेगा।

आर्य जाति का यह महान् आविष्कार जिसे संसार भर के विद्वान स्वीकार करते हैं जिससे न मुसलिम विद्वान मुकरते हैं और न यूरोप के।

इतना होने पर भी हत भाग्य आर्य जाति तेरा—हजारों वर्षों की गुलामी की जंजीर कटने पर भी आज तेरे पूर्वजों के आविष्कार १ से १० तक के अंकों को राष्ट्रभाषा से वहिष्कृत करके 1-10 अंग्रेजी अंकों को स्वीकार किया गया और इन्हें अरबी अंक कहा गया। यह तथा अन्य ऐसी बातें हैं जिसे आर्य जाति की

पराधीनता ही कहा जा सकता है। आज न चरक, सुश्रुत को राजकीय सम्मान प्राप्त है और न राष्ट्र की शिक्षा-पुस्तकों में पंचतन्त्र को कोई स्थान। वेद और उपनिषदों की तो बात ही क्या ?

आविष्कारक आर्य जाति

दिल्ली में आईये और देखिए---आर्य जाति द्वारा निर्मित हजारों वर्षों का प्राचीन—विशाल लोहस्तम्भ जिसे देखकर संसार के इन्जीनियर दंग हैं, वह यह भी निश्चय नहीं कर पाये कि इस लोहस्तम्भ में कौन-कौन-सी और कितनी-कितनी धातुएें मिलाई गई हैं जिसके कारण इस पर आज तक जंग नहीं लगा। सर्दी, गर्मी और वर्षात् के इसने हजारों झटके झेले हैं। हजारों वर्षों में लाखों बार भूकम्प आये होंगे किन्तु यह लोहस्तम्भ आज तक हिला नहीं, हजारों बार बिजलियें गिरी होंगी, इस पर कुछ आंच नहीं। एक सनकी शहन्शाह ने दिल्ली को ऐसा उजाड़ा कि दिल्ली में एक बिल्ली भी न रह पाई थी किन्तु वह बादशाह भी इस महान लोह-स्तम्भ को छू नहीं सका। गत हजारों वर्षों में दिल्ली पर अनगिनत गोलाबारी हुई किन्तु यह अछूता ही खड़ा हुआ आर्य जाति की विज्ञान कला का नाम ऊँचा किए हुए है।

आर्य जाति के अनेक ऐसे कलाकौशल के चिह्न भारत भर में आप जहाँ भी देखेंगे—आपको दर्शन देंगे। अजन्ता की गुफाएँ, चित्तौड़ का विजय स्तम्भ, उदयपुर की अगाध झील में महल, दिल्ली, जयपुर और काशी के "जन्तर-मन्तर" भारत भर के पर्वतों पर हजारों विशाल दुर्ग, भव्य मन्दिर और भवन यत्र-तत्र-सर्वत्र आप देखेंगे जिनके निर्माता न यूरोप से आये, न ईरान से, जिन्हें आर्य जाति के महान् विज्ञान विशारदों ने ही निर्माण किये थे।

इतना सब-कुछ होने पर भी आर्य जाति का आज न गौरव गान गाया जाता है और न हम स्वयं अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पित ही करते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

संसार को सभ्यता सिखाने वाली, ज्ञान-विज्ञान में सर्वोत्तम, राजनीतिज्ञों से

भरपूर यह आर्य जाति का फिर पतन क्यों हुआ, क्यों इस पर विदेशी हमले होते रहे, क्यों यह मार खाती रही, क्यों विदेशी लोग हजारों वर्षों तक इसकी गर्दन पर तलवार के जोर से इसे पद दलित करते रहे।

आर्य जाति के तीन महान् विश्वविद्यालय जिनमें नालन्दा का विश्वविद्यालय शिरोमणी था, जिसमें १८००० (अठारह हजार) विद्यार्थी अध्ययन करते थे, जिसमें विभिन्न भाषाओं के १२०० अध्यापक पढ़ाने वाले थे, जिसमें हजारों सेवाभावी सेवक थे जिसमें पढ़ने-पढ़ाने वाले पवित्र गौ-दुग्ध और गोघृत भरपूर पीते-खाते थे, अन्न और फलों की तो वहाँ कमी ही नहीं थी।

पढ़ने वालों पर फीस नहीं थी, अध्यापक वेतन की चिन्ता से मुक्त थे, इसके लिए न चन्दा मांगा जाता था और न भिक्षा की झोली फैलाई जाती थी। यह सारा प्रबन्ध राज्य करता था। प्रजा का शिक्षित करना राज्य अपने अनेक कर्त्तव्यों में से एक शिक्षा को निःशुल्क और प्राथमिकता देता था।

आप प्रश्न करेंगे कि इतना सब कुछ होने पर भी यह महान् आर्य जाति विदेशियों से कैसे पददलित होती रही। ऐसे विशाल विश्वविद्यालय का विध्वंश कैसे हुआ।
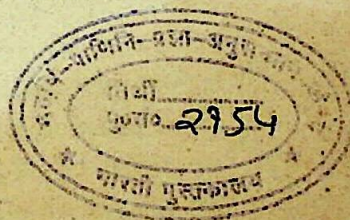
पतन के मूल कारण

भूतकाल में आर्य जाति के पतन के जो कारण थे वह तो आज भी ज्यों के त्यों हैं ही—किन्तु यदि हिसाब लगाकर देखा जाए तो पतन के वह कारण भूतकाल से वर्तमान तक हजारों गुणा वृद्धि पर हैं।

१—उस समय राज्य लिप्सा में राजे परस्पर लड़ते थे तो आज के राजनेता राजलिप्सा के कारण सारी जनता को आये दिन लड़वाकर राष्ट्र का चकनाचूर कर रहे हैं।

स्वराज्य के २५ वर्षों में नेताओं के कुचक्रों में फंसकर हजारों वार अस्पताल, रेल, बस, तार, पोस्ट; वायुयान, सरकारी दफ्तरों में हड़तालें, अग्निकाण्ड, खूनी काण्ड, सरकारी, गैर सरकारी सम्पत्तियों का भयंकर विनाश, राजकर्मचारी विद्रोह, पुलिस विद्रोह आदि-आदि इतने भयंकर काण्ड हुए हैं और जिनमें अरवों रुपयों की हानि, हजारों लोगों की मृत्यु, लाखों बेघरवार—कोई हिसाव नहीं। यह निरी कल्पना नहीं हैं—२५ वर्ष की जाँच कराकर देखलें। और यह भी निश्चय है कि यह सारा सत्यानाश हुआ है—हिन्दू जाति का ही।

२—सम्राट अशोक द्वारा अहिंसा अपनाने से विदेशी आक्रान्ताओं को खुली छूट मिल गई थी। चाहे जब आये और विशाल आर्य जाति को पैरों तले रौंद कर चले गये या यहीं जम गए।

नालन्दा विश्वविद्यालय पर केवल २०० सिपाहियों ने हमला किया और सारे विश्वविद्यालय को भूमि पर रौंद डाला। दूध, घी खाने वाले मोटे-ताजे हट्टे-कट्टे १८ हजार विद्यार्थी और १२ सौ अध्यापक ऐसे भाग गए जैसे कोई बालक भिरड़ों के छत्ते में एक छोटी-सी कंकर फेंक देता है तो मनुष्यों को काट खाने वाली वह मक्खियें छत्ता छोड़कर भाग जाती हैं। यही दशा अहिंसक हिन्दू जाति की हुई जो आज तक भी यह अहिंसा हमारे पीछे पड़ी हुई है।

आश्चर्य तो यह है कि अहिंसा के महान् आदर्श का भयंकर दुरुप्रयोग किया जा रहा है। आततायी रिवालवर लेकर हिन्दू को मारने आवे और हिन्दू अहिंसा-अहिंसा कहकर मर जावे। फिर मरने वाले का यश गाया जावे और मारने वाला भी अपने मतवालों में यश पावे। वलिहारी है आज की विचारधारा की।

अहिंसा के साथ ही वैराग्यवाद और अहम् ब्रह्मवाद ने भी कम हानि नहीं पहुँचाई। हिन्दू जाति में प्रति दिन गीत गाये जाते हैं:—

ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, यह दुनियां रैन बसेरा।

अर्थात् इनकी दृष्टि में राष्ट्र-रक्षा, राष्ट्र-निर्माण, राजधर्म कुछ नहीं। विदेशी हम पर राज करें और हम वैरागी बनकर राम कृष्ण के नाम की माला जपते रहें। साथ ही नानापन्थों मतो और पाखण्डों ने भी आर्य जाति के व्यापक टुकड़े-टुकड़े

कर दिये थे। और आज भी नये-नये पाखण्ड, मत और अनेक भगवान इस हिन्दू जाति की एकता के सूत्र को तोड़ रहे हैं। जिससे हिन्दू जाति निर्बल हो रही है और इसका लाभ विधर्मियों और विदेशियों को पूरा-पूरा हो रहा है।

आश्चर्य होता है आज कृष्ण के नाम लेवाओं पर—जिस कृष्ण ने अपने चक्र से शिशुपाल का सिर काट दिया, आततायी जरासन्ध को मरवा कर ८८ राजाओं को कैद से मुक्त करा दिया और सती द्रोपदी के अपमान का बदला कौरवों का संहार कराके लिया था। उसी कृष्ण के भक्त आज गाते फिरते हैं:—

हमें क्या काम दुनिया से, हमें तो कृष्ण प्यारा है।

प्रसंगवश यहाँ महाभारत की उस घटना को भी लिखे देता हूँ। युद्ध के मैदान में विजय की कामना से कृष्ण ने युधिष्ठिर से "अश्वत्थामा हतः" कहलवा दिया इस कारण आज तक युधिष्ठिर को नरक वास करने वाला कहा जाता रहा है। मुझे भी सम्पूर्ण महाभारत के पारायण और प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त रहा है—मेरी जानकारी में यह झूठ तो कृष्ण ने बुलवाया था, महाभारतकार ने कृष्ण को नरक न भेजकर युधिष्ठिर को भिजवा दिया। किन्तु युधिष्ठिर ने अनेक प्रसंगों में स्वयं झूठ बोला और भाईयों से बुलवाया इस पर कोई भी नरक में नहीं गया।

मैं तो यह मानता हूँ कि युद्ध के मैदान में और राष्ट्र रक्षा के लिए किसी भी कारण से क्षत्रिय के लिए झूठ बोलना न अधर्म है और न नरक में जाना।

इस घटना का परिणाम ५ हजार वर्षों से राजा और प्रजा को भोगना पड़ रहा है। हमारी राजनीति और रणनीति को दूषित किया, जिससे हिन्दू जाति की गर्दन पर विदेशियों की तलवारें लटकती रहीं।

आर्य हिन्दू जाति के संहार का एक बड़ा कारण यह था कि क्षत्रिय जातियाँ परस्पर लड़ती रही और तीसरा विदेशी पंच बनकर इन लड़ाकू वीर क्षत्रियों को अपना गुलाम बनाकर राज्य करता रहा। एक हजार वर्ष का इतिहास इन्हीं घटनाओं से भरा पड़ा है।

पृष्ठ के पृष्ठ वीर राजपूतों और वीर क्षत्राणियों के खून से लथपथ हैं। अनगिनत आर्य जाति के बहादुर तलवार के घाट उतरते रहे और अनगिनत

आर्य जाति की वीर ललनाएं जौहर व्रत की अग्नि में दग्ध होती रहीं। अथवा वे कायर, गुलाम बनते रहे, जो अपनी पुत्रियों को आततताइयों को भेंट करते थे।

हजारों वर्षों के इतिहास में सर्वनाश और पतन होता हुआ देखा है—उस महान् आर्य जाति ने, जिनके पूर्वज थे—भगवान राम, भगवान कृष्ण और आचार्य चाणक्य। यदि उस काल में आर्य जाति ने कृष्ण और चाणक्य की राजनीति पर आचरण किया होता तो सर्वनाश की दशा को क्यों प्राप्त होते। किन्तु आज भी तो उसी सर्वनाश के मार्ग पर भगे चले जा रहे हैं।

इतिहास साक्षी हैं कि जिन राजाओं ने अपनी कन्या विधर्मियों को दी उनका आज तक इतिहास ने यश नहीं गाया। किन्तु आज जो हिन्दू ललना विधर्मी के पास जैसे-तैसे चली जाती है उसका राष्ट्र में सम्मान होता है, बधाई के तार पहुँचते हैं, उपहार दिये जाते है और दम्पति को राज्य में ऊँचा मान सम्मान प्रदान किया जाता है।

ऐसी दशा में इस महान आर्य जाति का उत्थान होगा या भयंकर ह्रास—मैं क्या लिखूं, कलम काँपती है।

हजारों वर्षों के विनाश को सुनकर, पढ़कर देखकर आज भी हिन्दू जाति उसी विनाश के मार्ग पर जा रही है और दूसरे लाभ उठाकर राज्यगद्दी हथिया रहे हैं। चारों ओर आँखें खोलकर देखोगे तो यही दिखाई देगा। पहले हिन्दू जाति के क्षत्रिय राजे परस्पर लड़ते थे तो आज राजनैतिक दल बनाकर हिन्दू ही आपस में लड़ रहे हैं। सत्ताधारी काँग्रेस, पुरानी काँग्रेस, समाजवादी दल, प्रजा समाजवादी पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी, स्वतन्त्र पार्टी, कई कम्युनिस्ट पार्टी क्रान्ति-दल, द्रविड़संघ आदि पार्टियों के निर्माता हिन्दू ही तो हैं जो दिन रात एक दूसरे की टाँग खींच कर हिन्दू जाति को हानि, राष्ट्र का सत्यानाश, भारतीय सभ्यता का सर्वनाश आये दिन कर रहे हैं और दूसरे लोग इन पार्टियों में घुसकर इनका उल्लू बनाकर अपना लक्ष्य पूरा कर रहे हैं।

मैं हिन्दू जाति में जन्में किसी भी नेता से पूछना चाहता हूँ कि जब आप आये दिन अपने भाषणों में पुराने हिन्दू राजाओं को परस्पर लड़ने, इन्हें मूर्ख कहने और उसके कारण राष्ट्र को विदेशियों के कब्जे में जाने का दोष दिया करते

हैं तब आज आप अपने आचरण पर विचार तो करें कि क्या आप आये दिन कुर्सी छीनने की खातिर नाना प्रकार के प्रपञ्च, विदेशियों से षड़यन्त्र, जनता को सिर फुटव्वल करा कर सम्पूर्ण राष्ट्र और आर्य जाति को विनाश के मार्ग पर नहीं ले जा रहे हैं ? क्या भावी हिन्दू सन्तान और भावी इतिहासकार आपको उसी प्रकार देशद्रोही जाति द्रोही नहीं लिखेंगे जैसे आप हजारों वर्ष पुराने सत्ताधारियों को देशद्रोही और हिन्दू साम्राज्य को नष्ट करने वाले कहते रहते हैं।

यह बिल्कुल सत्य है कि पहले कोई एक सर्वोच्च सत्ता नहीं थी। छोटे-छोटे राजा होते थे जो परस्पर लड़ते रहते थे। किन्तु आज जिसे सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न सत्ता समझा जाता है उसकी दशा क्या पहले युगों के राजाओं जैसी नहीं हो रही। कभी नेताओं के कुचक्रों से सारी रेल व्यवस्था ठप्प कभी सरकारी दफ्तरों में काम बन्द, कभी नगर बन्द, कभी सारी बिजली बन्द और कभी पानी, कभी पुलिस निष्क्रिय और कभी डाक बन्द, कभी तार। कभी हस्पताल में हड़ताल और कभी सरकारी भण्डार भस्म। क्या इसी प्रकार से सर्वोच्च सत्ता शक्ति सम्पन्न हो सकती है। क्या आये दिन राज्यों के टुकड़े, राज्यों में भी जिलों के टुकड़े, जिलों में गावों के टुकड़े यहाँ तक ही नहीं मुझे पता है कि मोहल्लों के भी टुकड़े हुए हैं। क्या यह शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के सुदिन के लक्षण है। बिल्कुल नहीं, हरगिज नहीं।

पुराना इतिहास साक्षी है— छोटे-छोटे राजा परस्पर तो लड़े, किन्तु प्रजा ने न हड़ताल की, न राजमहल फूंके। किन्तु आज यह सब कुछ हो रहा है। जिसका परिणाम घूम फिर कर हिन्दू जाति को ही भोगना पड़ रहा है और दूसरे बीच में घुस कर बड़े मजे ले रहे हैं। कोई इसे थपकी दे रहा है और कोई उसे थपथपा रहा है।

राष्ट्र के नेताओं की इस आपा-धापी से शासन कमजोर हो रहा है। राष्ट्र की पुलिस को आये दिन, हर समय इन नेताओं के आगे-पीछे फिरने से फुर्सत नहीं। फिर गुंडा-गर्दी, चोरी डकेती, कतल, अपहरण, बलात्कार, छीना-झपटी, जेब कतरी आदि कुकर्मों से जनता को बचाने की पुलिस को कहाँ फुर्सत।

मैंने अनेक राज्य और राजा देखें हैं। मुझे याद है—उदयपुर के महाराणा का-जो सायंकाल को घोड़ा गाड़ी में बैठकर राजधानी के सड़कों पर घूमता था।

पुलिस उसके आगे होती थी ना पीछे। ऐसा प्रतीत होता था कि इस महाराणा को अपनी प्रजा से कोई खतरा नहीं।

किन्तु आज जब मन्त्रियों के आगे-पीछे दायें-बायें पुलिस फिरती रहती है तो ऐसा लगता है कि जैसे इन्हें चारों ओर से खतरा हो। तो जहाँ के शासक को हर समय अपने जीवन का खतरा रहता हो वहाँ की प्रजा की सुरक्षा की तो बात ही क्या ?

चुनाव

राष्ट्र में आये दिन चुनाव होते हैं, कभी राष्ट्रपति के, कभी संसद के, कभी राज सभा के, कभी राज्यों की विधान सभाओं के, कभी नगर-पालिकाओं के, कभी ग्राम सभाओं के। इन चुनावों पर जहाँ सरकार का अरबों रुपया खर्च होता है वहाँ जनता का भी। फिर सिर फुटव्वल, खूनी लड़ाई, फूट और कलह भयंकर रूप धारण करती रहती है और इसमें भी नाश होता है—हिन्दू जाति का ही क्योंकि यही तो बहुसंख्या में है।

क्या देश का हिन्दू अपनी आँखों से यह सब कुछ विनाश होता हुआ देखता रहेगा।

डाक्टर मनूची जो ४६ वर्ष तक शाहजहाँ और औरंगजेब की नौकरी में रहा था उसने अपने ग्रन्थ में एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात लिखी है—

"हिन्दुस्थान में चार ऐसे बड़े हिन्दू घराने हैं यदि यह चारों एकता कर लें तो मुगलिया सलतनत एक दिन भी हिन्दुस्थान में नहीं रह सकती।"

इनमें उदयपुर का राणा ही ऐसा है जिसके पास १॥ लाख पैदल और ५० हजार घुड़सवार लड़ाकू राजपूत हैं जो युद्ध से मुँह मोड़ना ही नहीं जानते। इतनी ही लड़ाकू सैना जोधपुर में और जयपुर में है इनसे कम बुन्देले हैं जो बड़े बहादुर हैं।"

हत भाग्य आर्य जाति तेरा। न तो तेरे पूर्वज जब मिलकर बैठे और न आज। आज के विधान शास्त्री तो विरोधी दल बनाना ही ठीक मानते हैं—सहयोगी दल नहीं।

इसीलिए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हृदय विदारक शब्दों में कहा था—आपस की फूट से कौरवों-पाण्डवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु, अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा व आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दु:ख सागर में डुबा मारेगा।……परमेश्वर करे कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाये।

हिन्दू घट रहा है ?

आप सन् १८८१ की जनगणना से आज १९७१ तक की जनगणना के आंकड़ों को पढ़ जाईये हर १० वर्ष में हिन्दू घटा है। इसी १९७१ की जनगणना में अन्यों की अपेक्षा हिन्दू घाटे में रहा है।

हिन्दू के घटने के वैसे तो अनेक स्रोत हैं किन्तु गत १५ वर्षों से हिन्दू एक ऐसे चक्र में फंसता जा रहा है जिसके रहते हिन्दू, अनिवार्य रूप से किसी दिन अल्पमत में रह जायेगा। अल्पमत में होने से फिर गुलामी की चक्की पीसता फिरेगा, किन्हीं की कब्रें खोदता फिरेगा या दूसरे दर्जे के गुलामों की लिस्ट में नाम दर्ज रहेगा।—वह भयंकर चक्र है :—

परिवार नियोजन

परिवार नियोजन के भंवर में हिन्दू ही फंस रहा है और हिन्दुओं में भी पढ़ा-लिखा, समझदार, बुद्धिमान् और फटाफट अंग्रेजी बोलने वाला नेता फंस रहा है। इनमें प्राय: ऐसे हैं जो या तो सन्तानहीन हैं या हैं—तो एक या दो, तीन का बाप तो बिरला ही होगा। विशेष बात यह भी है कि राज की बागडोरें भी ऐसे ही महानुभावों के हाथों में हैं।

हाँ जो साधारण श्रेणी या बिल्कुल छोटी श्रेणी के हिन्दू हैं वे अभी तक परिवार नियोजन के चक्र में नहीं फंसे हैं। इन्हीं के कारण अभी तक हिन्दू बहुमत में हैं। इन्हीं के वोट हैं जिनसे भारत सरकार बनती रही है।

दूसरी ओर मुसलमान और ईसाई हैं। इनके तो मौलवियों ने और पादरियों ने परिवार नियोजन से तोबा की हुई है। वह जानते हैं कि हिन्दू को परिवार नियोजन में उलझने दो। इनकी तादाद घटने दो, हम इस उलझन में न फंसकर अपनी तादाद बढ़ावेंगे तभी तो हमारा राज्य होगा। क्योंकि वोटों पर ही तो राज्य बनता है अतः हिन्दू की वोट कम हो और हमारी बढ़ें। यही प्रयत्न जारी रहे।

मैं एक रिक्षा में जा रहा था उससे पूछ बैठा—बेटा कितने बच्चों के बाप हो उसने हंसकर कहा—अल्लाह ने सात दिये हैं। मैंने कहा अभी तो तुम युवक हो—आगे और भी बच्चे होंगे तब एक रिक्षा से बच्चों का कैसे गुजारा करोगे। वह बोला—मैं गुजारा कराने वाला कौन होता हूँ—मेरी क्या औकात है। अल्लाह ने औलाद दी है, अल्लाह ही गुजारे के लिए देगा, और नहीं देगा तो अल्लाह की मर्जी। उसकी बातें सुनकर मेरा सिर चक्कर खाने लगा, रह-रहकर विचार घूमने लगा कि इस प्रजातन्त्र के युग में इन्हीं का राज होगा, न शिक्षित का न बहादुर का और न नेता का।

आश्चर्य तो यह है कि एक विधर्मी रिक्षा वाला, झल्लीवाला, और तांगे-वाला तो यह जानता है कि वोटों से राज्य बनते हैं अतः वोट बढ़ाने के लिए अधिक-से-अधिक सन्तान पैदा करनी, एक बीबी से, दो बीबी से, तीन और चार बीबी से जितने भी बच्चे हो सकें पैदा करेंगे तो दीन की खिदमत होगी, रोजी रोटी तो अल्लाह देगा ही। तर नहीं तो सूखी ही सही। वह यह भी सोचता है कि अपने यहाँ बीबी न मिल सके तो जैसे हो वैसे दूसरों की छीनो और दीन की खिदमत करो।

किन्तु पढ़ा-लिखा हिन्दू कुछ नहीं सोचता वह तो सन्तान के झंझट से छुट्टी पाना और नौजवहार उड़ानें में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते हैं।

मैं तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम नम्बर पर चीन है और दूसरे नम्बर पर भारत और भारत में भी बहुसंख्या में हिन्दू हैं। इन

हिन्दुओं की संख्या बढ़ न जाय, भारत, चीन से जनसंख्या में बराबर या अधिक न हो जाय इस चिन्ता से संसार के अनेक राष्ट्रों ने हमारी सरकार को भारी अनुदान देकर परिवार नियोजन के मार्ग पर चलाया है जिससे भारत की हिन्दू जन संख्या भारत में कम हो सके। अभागा हिन्दू ही इन विदेशी शिकारियों के जाल में फंस गया है जो हिन्दू जाति के लिए भयंकर खतरा सिद्ध होगा। तब हिन्दू का क्या बनेगा जरा गम्भीरता से विचार तो करें।

आज आये दिन हमारी सरकार की ओर से बड़े-बड़े विज्ञापन अखबारों में भरे होते हैं, जगह-जगह प्रदर्शनी दिखाई जाती है, परिवार नियोजन कैम्प लगाये जाते हैं। हजारों डॉक्टर और डॉक्टरनी देवियों और पुरुषों को सन्तान हीन करने पर लगाये हुए हैं। अरबों रुपया इस पर बहाया गया है। गाँव-गाँव में परिवार नियोजन की प्रचारिकायें घूम रही हैं।

देवियों को लूप और पुरुषों को नसबन्दी कराने के लिए इनाम दिया जाता है। इस काम के ऐजेन्ट नर-नारियों को भी इनाम दिया जाता है। मानो सम्पूर्ण सरकारी मशीनरी इसी कार्य पर लग रही हों। और यह सब हो रहा है—मेरी हिन्दू जाति के लिए, मेरे शिक्षित- वर्ग के लिए, मेरे बुद्धिजीवि वर्ग के लिए। मुसलमान और ईसाई तो न नसबन्दी कराते हैं और न लूप को सूंघते ही हैं।

परिवार नियोजन के प्रचारक आये दिन नए-नए, भाषण, युक्तियें और सब्जबाग दिखाते हैं। अधिक सन्तान पैदा होने का बड़ा घिनौना दृश्य दिखाते हैं। वे यह भी नहीं कहते कि इसमें हिन्दू ही फंसे और कोई नहीं।

किन्तु मैं बड़े ही विनम्र शब्दों में सरकार से जानना चाहता हूँ कि जब वोटों के आधार पर ही सरकार बननी है। तब देखना होगा कि जब एक जाति वोट बढ़ाने के लिए परिवार नियोजन से परहेज करती है। येन-केन अपनी वोट वृद्धि में लगी है तब दूसरी जाति को ही परिवार नियोजन में फंसाकर क्यों घटाएं। यदि सरकार भी यही चाहती हो कि हिन्दू बहुमत में हैं—इन्हें कम करना चाहिए तब ऐसी दशा में मेरे लिए अरण्यरोदन के सिवाय और क्या बचता है।

हाँ यहाँ पर मैं दी जा रही एक युक्ति का बलपूर्वक खण्डन करना भी चाहता हूँ और वह यह है कि दो या तीन सन्तान उत्तम, श्रेष्ठ विद्वान और बलवान्

होगी। अधिक सन्तान तो कूड़ा-करकट और राष्ट्र पर बोझ ही होगा।

इस युक्ति पर मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि राष्ट्र के वोट की लिस्ट में विद्वान्, बलवान् और कूड़ा-करकट सबका एक ही स्थान है। वोट की लिस्ट में विदुषी और वेश्या (रण्डी) का एक ही समान दर्जा है। वोटर का कोई मापदण्ड नहीं है।

मैं जानना चाहता हूँ कि इसकी क्या कसौटी है कि पहली दो या तीन सन्तान श्रेष्ठ होगी और आगे की निकम्मी। मैं जानता हूँ कि भारत का महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर अपने पिता का ९वां बेटा था जिसने सारे विश्व में ख्याति प्राप्त की थी लेकिन इनसे पहली सन्तानों को कोई भी नहीं जानता।

यूरोप का महाकवि मिलटन अपने पिता का ११वाँ बेटा था जो संसार में विख्यात है। क्या कोई जानता है—उसके छोटे भाईयों को ?

इस प्रकार मेरे पास भारत के राष्ट्रीय नेताओं की ऐसी सैकड़ों की सूची हैं विस्तार भय से नहीं लिख रहा हूँ।

एक बात मैं हिसाब की बताना चाहता हूँ। वह यह कि तीन पैदा करने में औसतन एक मर जाता है। शेष दो में एक पुत्री और एक पुत्र, इस हिसाब से आप आने वाले २५ वर्ष का हिसाब देखें कि कितने जवान तीनों सेनाओं के लिए पुलिस के लिए, कितने सरकार को चलाने के लिए, कितने डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर, व्यापारी, उद्योगपति, कृषक, मजदूर, तथा अन्यान्य कार्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पैदा हुए होंगे या नहीं। मेरा हिसाब है कि हम संख्या में दिवालिए ही रहेंगे।

अतः आज इस दो या तीन के नारे की आवश्यकता नहीं है आज तो हमें जनसंख्या में चीन से भी आगे बढ़ना चाहिए तभी हम हिन्दू और हमारा राष्ट्र सुरक्षित रहेगा अन्यथा नहीं।

ऐसी दशा में हमारा नारा होना चाहिए—पहला बच्चा अभी नहीं, दस के बाद कभी नहीं। मेरी बात पर मेरे बहुत से बन्धु. नाक-भौ सिकोड़कर कहेंगे कि इतनी सन्तान क्या खावेगी, कहाँ से खाना आवेगा, कहाँ रहेगी, लिखते समय यह तो सोचना चाहिये था।

मैं अपने विचारक बन्धुओं से विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत जैसे विशाल देश में खाने के साधनों की कमी नहीं है। केवल व्यवस्था की कमी है। जरा विचार कीजिए—

१—लाखों एकड़ भूमि में "जौ" पैदा किया जा रहा है—शराब बनाने के लिए। यह बन्द किया जाय। इस भूमि में खाने के लिए अन्न पैदा किया जाय।

२—लाखों एकड़ में जिसमें बढ़िया गेहूँ पैदा किया जा सकता था उसमें तम्बाकू पैदा किया जा रहा है—केवल सिगरेट के कारखानों के लिए। मेरे विचार में यह भी बन्द होना चाहिए। केवल खाने का अन्न ही पैदा होना चाहिए।

३—करोड़ों एकड़ भूमि में गन्ना पैदा किया जा रहा है—देश और विदेशों में चीनी भेजने के लिए। विदेश में चीनी भेजने का मोह छोड़कर स्वदेश की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही गन्ना उत्पन्न करना चाहिए। शेष भूमि में अन्न।

गन्ने के शीरे से भारी मात्रा में शराब बनाई जा रही है। इसकी भी रोक-थाम होनी चाहिए।

४—अब तो भारत भर में हजारों एकड़ भूमि में बढ़िया शराब के लिए अंगूर पैदा किए जा रहे हैं। यह भी बन्द होना चाहिए।

५—जो भूमि अन्न उत्पन्न करती थी उस पर अनावश्यक रूप में दिन-रात बड़ी-बड़ी विशाल कोठियें। आरामगाह, सैर-सपाटे और मनोरंजन के क्लब बन रहे हैं, इन पर अंकुश लगाकर भूमि को अन्न के लिए बचानी चाहिए।

६—नेताओं की नारेबाजी के कारण अन्न उगलने वाली भूमि का भारी मात्रा में संहार हो रहा है। मैं ऐसे स्थान जानता हूँ जहाँ जनसंख्या ३० हजार है और वहाँ दो डिग्री कालेज, इन दोनों में कुल २०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। एक-एक कालेज ने सैंकड़ों एकड़ भूमि घेरी हुई है। सत्य बात तो यह है कि वहाँ एक कालेज की भी आवश्यकता नहीं थी। धन बरबाद और भूमि बरबाद। पर नेताओं का तो राग ही निराला है।

भूमि की बचाने की बातें तो आप जिधर देखेंगे उधर ही मिलेगी। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि भारत की उपजाऊ भूमि में अन्न उपजाने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

किसी अबला की आह सुनने वाला आज कोई महात्मा गांधी भी नहीं है तब अबला नारियों पर क्या गुजरती होगी—वही जाने।

इतना तो मैं कह सकता हूँ कि जैसा अत्याचार आज नारियों पर किया जा रहा है ऐसा अत्याचार तो सीता पर रावण ने भी नहीं किया था जिसका पुतला हर साल जलाया जाता है।

—यद्यपि इस पत्र में पात्रों के नाम-गाम के स्थान पर बिन्दियाँ लगा दी हैं, किन्तु इस घटना का पूरा ज्ञान है—आर्य नेता श्रीरामगोपाल जी शाल वाले को। उन्होंने ही उस बिलखती, तड़फती और अत्याचार पीड़ित ललना को महात्मा जी के सामने उपस्थित किया था। ला० रामगोपालजी चाहते थे कि इस केस को पुलिस में दे दिया जाए किन्तु महात्मा जी के आश्वासन पर कि मैं उन लोगों की खबर लूंगा—पुलिस में जाने का विचार छोड़ दिया। बाद में क्या हुआ; उन आततायियों की खबर ली गा उन्हें खबर देकर छोड़ दिया यह इस पूरे पत्र और उस पर महात्मा जी की भेद भरी टिप्पणी कुछ बता सकेगी।

यह घटना स्वराज्य से १५ मास पहले की है। स्वराज्य के बाद ऐसी घटनाएँ कितनी घटी होंगी इसकी जांच तो कोई जांच कमीशन ही कर सकता है।

दूसरी प्रकार आज ऐसे भी विवाह बड़े समारोह से किये जा रहे हैं जो धर्म-निरपेक्ष कहलाते हैं इन्हें देश के नेताओं का आशीर्वाद और उपहार प्राप्त होता रहता है। यह भी कहा जाता है कि ऐसे विवाहों में क्या हानि है जिनमें हिन्दू स्त्री कृष्ण की पूजा करती और मुसलमान नमाज अदा करता है। इसके लिए अनेक हिन्दू देवियों के उदाहरण दिये जाते हैं जैसे—

श्रीमती खान, श्रीमती असगर, श्रीमती अली, श्रीमती आसफअली, श्रीमती सिकन्दरबख्त इत्यादि। किन्तु आज तक कोई यह नहीं बता सका कि इनसे हुई सन्तानें हिन्दू बनेगी या मुसलमान। कोई ऐसा उदाहरण भी नहीं है कि किसी हिन्दू देवी ने अपने बच्चों को हिन्दू रहने दिया हो। यह भी एक भयंकर मार्ग है जिसके कारण आज देश में बहुसंख्यक हिन्दू नारियों द्वारा हिन्दू जाती को मृत्यु के मुँह में धकेला जा रहा है।

जब भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिरहुसैन थे तब उनके परिवार की किसी

बेटी ने एक ब्राह्मण युवक से विवाह करना चाहा, इस पर डा० [illegible] से आज्ञा मांगी, उनकी आज्ञा क्या थी— फतवा था, इसके अनुसार उस युवक ने इस्लाम स्वीकार कर लेना ठीक समझा।

दूसरी घटना है—भारत के महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर की पौत्री का मुसलमान वनकर नवाव पटौदी से विवाह करना। इस अवसर पर देश के अनेक नेताओं द्वारा बधाई दी गई। किन्तु पता नहीं हिन्दू जाति को सांप सूंघ गया या लकवा मार गया, जो इस प्रकार के हिन्दू जाति के विनाश के कारणों को सहन कर रहा है।

यह सत्य है कि भूतकाल में नारियों पर ऐसे घिनौने अत्याचार कभी नहीं हुए जितने आज हो रहे हैं। आज की नारी भगवान मनु के शब्दों में पूज्या थी, किन्तु अब पूज्या नहीं रही, अब तो नाचने वाली, कामवासना की पूर्ति करने वाली, सिनेमा में शृंगार करके चुम्बन कराते हुए दर्शकों को मोहित करने वाली तथा राष्ट्र के बड़े-बड़े समाचार-पत्रों में इनके नग्न चित्रों द्वारा सजाये जाने की सामग्री मात्र है। और अब तो इन्हें व्यभिचार करने, फिर गर्भ गिराने की खुली छूट दे दी गई है। आज बड़े-बड़े नगरों के चौराहों पर अर्द्धनंगी, कामुकता और चुम्बन करते हुए बड़े-बड़े घिनौने रंगीले पोस्टर लटके हुए देखे जाते हैं।

आज तो ऐसा लगता है जैसे विधाता ने नारी को नाचने वाली पुतली बनाया हो, किन्तु मेरा मत है कि विधाता ने नारी को नाचने वाली नहीं—महापुरुषों को उत्पन्न करने वाली, सतीत्व की वेदी पर बलिदान होने वाली, गृहस्थ का उच्चादर्श उपस्थित करने वाली तथा समय पड़ने पर तलवार पकड़कर दुष्ट-दलन करने वाली बनाया है।

आज कोई ऐसा कन्या शिक्षणालय नजर नहीं आता जहाँ के उत्सवों पर देवियों को शृंगार करा कर पैरों में घूंघरु बांध कर नचाया न जाता हो और मेरे जैसे बेशर्म बुड्ढे दर्शक बनकर मुस्कराते न रहते हों। इसे मैं नारी जाति का सम्मान कहूँ या अपमान, नारी का आदर कहूँ या अनादर। नारी को उच्चासन पर बैठने वाली कहूँ या नाच दिखाकर मजलिस की शोभा बढ़ाने वाली।

मुझे अब तक यही पता था कि हिजड़े नाचते हैं या वेश्या, किन्तु मेरी आर्य

जाति की अबोध कन्याओं को नाचना सिखाया जाता है। यह है दशा— उस नारी जाति की जो महापुरुषों की जननी, जो महावीरों की पत्नी और महादेवों की पुत्री हैं। ऐसी देवियों की भी कमी नहीं है जिन्हें लोभसे, लालच से, डराकर धमकाकर, फुसलाकर नराधम लोग अपने फौलादी पंजों में जकड़कर हिन्दू जाति को नष्ट करने में लगे हुए हैं। मैं चूंकि हिन्दू हूँ इसलिए हिन्दू नारियों पर हो रहे अत्याचारों पर आँसू बहा रहा हूँ किन्तु यदि ऐसे अत्याचार किसी विधर्मी नारी पर भी होते सुनूंगा तो मेरे आंसू की धार बन्द नहीं होगी। नारी पर अत्याचार करना और अत्याचार सहना भयंकर अपराध है। नारी नारी है, अपनी हो या पराई, स्वधर्मी हो या विधर्मी, नारी का आदर, सम्मान और रक्षा करने में ही मैं मनुष्यता मानता हूँ अन्यथा ऐसे मनुष्य तो पशु से भी गये बीते हैं।

आज कहा जाता है कि पुरातन काल के धर्माचार्य नारी निन्दक थे। मैं ऐसे लोगों को हठ धर्मी, द्वेष भाव से पूरित और विशाल आर्य जाति को बदनाम करने में अपनी शान समझने वाले मानता हूँ। यहाँ पर मैं भारत के चार महापुरुष— महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के विचार प्रस्तुत करता हूँ। सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि मनु के प्रमाण से महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

"जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती है।...

—ऐश्वर्य की कामना करने हारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समय में भूषण, वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें।

—जिस घर में कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

—जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता में भरी रहती हैं वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

महर्षि दयानन्द के इन शब्दों पर भी राष्ट्र को ध्यान देना चाहिए जो महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में लिखे हैं—

"जो स्त्री अपनी जाति गुण के घमण्ड से पति को छोड़ व्यभिचार करे उसको

बहुत स्त्री और पुरुषों के सामने जीती हुई कुत्तों से राजा कटवाकर मरवा डाले। उसी प्रकार अपनी स्त्री को छोड़ के पर स्त्री वा वेश्यागमन करे उस पापी-जन को लोहे के पलंग को अग्नि से तपा के लाल कर उस पर सुला के जीते को बहुत पुरुषों के सन्मुख भस्म कर देवे।"

यदि आज के राष्ट्र नेता महर्षि के उक्त आदेश पर आचरण करें तो फिर राष्ट्र में न व्यभिचारी रहेगा न व्यभिचारिणी।

महात्मा गाँधी हिन्दी-नवजीवन दि० ८ अगस्त १९२९ के अंक में लिखते हैं—

"हिन्दू सभ्यता में तो स्त्री का इतना सम्मान किया गया है कि प्राचीन काल में स्त्री का नाम प्रथम पद रखता था। उदाहरणार्थ हम 'सीताराम' कहते हैं, 'राम सीता' कदापि नहीं। विष्णु का 'लक्ष्मीपति' नाम प्रसिद्ध है ही। महादेव को हम पार्वती-पति के नाम से भी पूजते हैं। महाभारत ने द्रौपदी को और आदिकवि वाल्मीकी ने सीताजी को गौरव का स्थान दिया ही है। हम प्रातःकाल सतियों का नाम लेकर पवित्र होते हैं। जो सभ्यता इतनी उच्च है, उसमें स्त्रियों का दर्जा पशु या मिल्कियत के समान कदापि हो नहीं सकता।

पत्नी की रक्षा करना और अपनी हैसियत के मुताबिक उसके भरण-पोषण और वस्त्रादि का प्रबन्ध करना पति का आवश्यक धर्म है।"

आगे चलकर नवजीवन के १०-१०-२९ में महात्मा गाँधी जी फिर लिखते हैं:—

"राम का यश सीताजी पर निर्भर है। सीताजी का रामजी पर नहीं। कौशल्या, सुमित्रा आदि भी मानस के पूजनीय पात्र है। शवरी और अहल्या की भक्ति आज भी सराहनीय है। रावण राक्षस था, मगर मन्दोदरी सती थी। ऐसे अनेक दृष्टान्त इस पवित्र भण्डार में से मिल सकते हैं। मेरे विचार में इन सब दृष्टान्तों से यही सिद्ध होता है कि तुलसीदास जी ज्ञान पूर्वक स्त्री-जाति के निन्दक नहीं थे। ज्ञान पूर्वक तो वह स्त्री-जाति के पुजारी ही थे।

स्वामी श्रद्धानन्दजी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'कल्याण-मार्ग का पथिक' में लिखते हैं—

"वैदिक आदर्श से गिरकर भी जो सतीत्वधर्म का पालन पौराणिक समय में आर्य महिलाओं ने किया है, उसीके प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुँची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक विद्यमान है। यह मेरा निज का अनुभव है।

भारत माता का ही नहीं, उसके द्वारा तहज़ीब की ठेकेदार संसार की सब जातियों का सच्चा उद्धार भी उसी समय होगा जब आर्यावर्त्त की पुरानी संस्कृति जागने पर देवियों को उनके उच्चासन पर फिर से बैठाया जाएगा।"

राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी ने २९ सितम्बर १९५२ को दीक्षान्त भाषण में कहा था:—

प्राचीन काल में हमारे देश में स्त्रियों का कितना महत्त्वपूर्ण व उत्कृष्ट स्थान रहा है और प्राचीन भारत की स्त्रियों ने बड़ी निपुणता तथा चतुरता के साथ बुद्धि और त्याग के बल पर गृह एवं अनेकानेक सामाजिक कार्यों में किस प्रकार भाग लिया और किस प्रकार वे समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक रहीं। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे गणित-शास्त्र, नीति-शास्त्र, धर्म-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, गृहस्थ-शास्त्र आदि सभी विषयों में पारंगत थीं।

सीता, सावित्री, गार्गी, लीलावती आदि स्त्री रत्नों के नाम लेते हुए आज भी हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो उठता है।

हमारे यहाँ की स्त्री-जाति का चरित्र प्राचीन काल से उन्नत और उनकी परम्परा उज्जवल थी। उनके चरित्र आज भी नारी-जाति के सम्मुख ज्वलन्त उदाहरण के स्वरूप उपस्थित किए जा सकते हैं।

(भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण पृष्ठ २१६)

नारी-जाति के सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई पर सारे देश के नर-नारियों में तुलसीदास पर भारी क्रोध है और तुलसीदास के साथ समूची आर्य जाती को नारी निन्दक कहा जाता है।

कृपया शान्त मस्तिष्क से गोस्वामीजी की चौपाई पर ध्यान देने का कष्ट कर और इस बारे में मेरे विचार पर भी ध्यान देंगे तो तुलसीदास का ही नहीं सारी आर्य जाति का कलंक दूर होगा।

तुलसीदासजी की चौपाई आज इस प्रकार छपी हुई मिलती हैं:—

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

यदि यह ठीक हैं तो नारी निन्दा है-किन्तु मेरे विचार में चौपाई का पहला शब्द गलत है। मैंने ६० वर्ष पूर्व किसी रामायण में इस प्रकार पाठ पढ़ा था:—

ढोर गंवार शूद्र पशुनारी। ये सब ताड़न के अधिकारी ।।

यदि यह ठीक है तो इसमें नारी निन्दा नहीं है। कृपया विचार करें।

१—चौपाई में—ढोल शब्द जड़ है शेष चेतन है। चेतन को तो ताड़न से कष्ट होता है किन्तु जड़ (ढोल) को आप ताड़िए ही नहीं—फोड़ भी दीजिए तब भी उसे कोई कष्ट अनुभव नहीं होगा।

२—अत: ढोल के स्थान पर ढोर ही होना चाहिए क्योंकि ढोर को ही ताड़न से कष्ट होता है। ढोल को नहीं—अन्तिम पद में, नारी नहीं—पशुनारी है अर्थात् जिसकी पशु जैसी बुद्धि हो वह तो ताड़न की अधिकारी है ही फिर चाहे वो नर हो या नारी। आशा है मेरे विचार को युक्ति की कसौटी पर कसकर देखेंगे तो आप नारी निन्दा का दोष गोस्वामी जी के मत्थे पर मंढने और आर्यजाति को बदनाम होने से बचायेंगे। सिद्धान्त के वाद-विवाद में न पड़कर—मेरे विचार में आर्यजाति ने नारी-जाति को जितना उच्च स्थान दिया है किसी दूसरी जाति ने नहीं।

आज भारत के पहाड़ों को देखें उनकी शिखा पर किसी-न-किसी देवी का मन्दिर बना मिलेगा। भारत भर के ग्राम-ग्राम में देखें—किसी-न-किसी माता का मन्दिर और सतियों के स्थान मिलेंगे।

भारत भर में स्वतन्त्रता की लड़ाई "भारत माता" की जय के नारों से लड़ी जाती थी। कांग्रेस के किसी भी छोटे बड़े सम्मेलन को "वन्दे मातरम" के साथ प्रारम्भ किया जाता था और भारत माता की जय के साथ समाप्ति होती थी।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद वन्दे मातरम का स्थान "जन गण मन नायक" ने ले लिया और भारत माता की जय का स्थान जयहिन्द ने ले लिया। ऐसा क्यों हुआ यह तो राष्ट्रीय नेता ही जाने- मेरे अनुमान से तो यह परिवर्तन किसी सम्प्रदाय विशेष की तुष्टि के लिए किया गया है। जैसा भी हो। यह भी सत्य है कि भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जहाँ मातृ शक्ति का आदर भारत माता की जय बोलकर किया जाता है और कोई ऐसा नहीं है जहाँ मातृशक्ति की ऐसी पूजा हो। मैंने तो आज तक सुना नहीं कि अन्य राष्ट्र भी यथा पाकिस्तान माता की जय हो, चीन माता की जय हो, रूस माता की जय हो, अमरीका माता की जय हो, इंगलैंड माता की जय हो का नारा लगाकर राष्ट्र को मातृशक्ति के सम्मान प्रदान करते हों

फिर ध्यान दीजिए कि विधर्मियों द्वारा किसी भी प्रकार नारी अपहरण से आर्य जाति अनेक खतरों में पड़ती रही है, पड़ सकती है और पड़ेगी। अतः जैसे भी हो विधर्मियों द्वारा नारी अपहरण की रोकथाम की जाय। स्वधर्मी हो या विधर्मी वह नारी जाति की ओर कुदृष्टि न कर सकें, कोई भगा न सकें, फुसला न सकें, अपहरण बलात्कार, व्यभिचार और अत्याचार न कर सके नारी पीड़ित होकर चीतकार न सके इसका कठोरता से राज्य को प्रबन्ध करना चाहिए।

सरकारी नौकरी करने वाली अथवा कालेजों में पढ़ने वाली नारियें भी नरा धमों से सुरक्षित नहीं है। यदि यह ठीक है तो राज्य कठोरता से इनकी रक्षा करें। यदि राज्य रक्षा करने में असमर्थ हो तो माता पिता को चाहिए कि अपनी बहू-बेटियों को नौकरी और कालेज की पढ़ाई से छुट्टी दिला लें।

एक नारी का विधर्मियों में जाने का परिणाम वैसा ही है जैसा चक्रवृद्धि ब्याज या व्यवसाय का—

कहते हैं कि किसी बुढ़िया ने एक परचूनिये से पूछा कि बेटा कितनी कमाई कर लेता है। दुकानदार बोला कि ६ मास में दुगने हो जाते हैं। इस पर बुढ़िया ने उसे दो पैसे दुकान में जमा करने को दिये। फिर वह १२ वर्ष बाद आई और दुकानदार से अपने दो पैसे के हिसाब की माँग की।

हिसाब किया गया तो पता लगा कि दो पैसे से १२ वर्ष में ५२४२८८ रुपये हो गए। यह पढ़कर आप चौंके नहीं हैरान न हों—हिसाब करके देख लें।

यदि यह ठीक है तो इसी प्रकार एक-एक हिन्दू जाति की बेटी के घटने से हिन्दू जाति इसी हिसाब से घटती रहेगी और विधर्मी इसी हिसाब से बढ़ते रहेंगे।

गौरक्षा की समस्या

आज से १०० वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गौरक्षा की ओर देश-वासियों को आँखें खोलने के लिए "गौकरूणा निधि" पुस्तक प्रकाशित कराई।

महर्षि के निर्वाण के पश्चात् आर्य समाज ने जगह-जगह गो रक्षा के लिए गोशालायें स्थापित कराई, गौरक्षा के लिए आन्दोलन किए भारी बलिदान दिए।

किन्तु अंग्रेज के समय में काशमीर जैसे अनेक हिन्दू राज्यों को छोड़कर कहीं भी गोवध नहीं रुका। आशा थी कि अंग्रेज के चले जाने पर विना कहे-सुने स्वराज्य की प्रथम रात्रि में ही गो रक्षा की घोषणा हो जावेगी।

किन्तु आशा के विपरीत हुआ। हिन्दू राज्य समाप्त हुए। उनके साथ ही गौवध-बंदी भी वंद हुई। २७ वर्षों की स्वतन्त्रता में गोवंश की रक्षा के लिए भारी आन्दोलन, सत्याग्रह, जेल, भूख हड़ताल, फिर गोली, अश्रुगैस और लाठी प्रहार और पता नहीं कितने गौभक्त मौत के मुँह में चले गए। सन् १९६६ से अब तक कई दर्जन गौ भक्तों पर दिल्ली के न्यायालय में केस चल रहे हैं—ईश्वर ही जाने कव तक यह केस चलते रहेंगे। इतना सब कुछ होने पर भी गोवंश का दिन पर दिन ह्रास होता जा रहा है।

मेरे विचार में तो यदि सरकार गोवंश के वध पर रोक भी लगा दे तो भी अब गौवंश जीवित नही रहेगा—ऐसा मेरा अनुमान है। यदि जीवित रहा भी तो उतना ही रहेगा जितना हाथी ?आश्चर्य की बात नहीं है—तथ्य है।

३०० वर्ष पहले मुसलिम काल में अकेली दिल्ली में ९००.हाथी थे आज एक भी नहीं। इसी प्रकार सारे राष्ट्र के विभिन्न राज्यों में हाथियों की पलटनें थी किन्तु आज दर्शनों के लिए भी दुर्लभ।

गोवंश की रक्षा और वृद्धि पर यदि सरकार और धनी जनता ने ऐसी ही उपेक्षा की तो निश्चय समझिये कि गौपाष्टमी की पूजा करने के लिए गौमाता के दर्शन वैसे ही दुर्लभ होंगे जैसे आज दशहरे के दिन नीलकण्ठ के।

यह वात मैं भावावेश में नहीं लिख रहा हूँ वास्तविक तथ्य का निरूपण कर रहा हूँ। कृपया मेरे विचारों पर ध्यान दें—

१—गौ का पालन जमीदार और कृषक करता था बैलों की जोड़ी और खाद के लिए। दूध के लिए तो वह भैंस पालता था।

२—वैल खेती के लिए, रथों में सवारियों के लिए, मण्डियों में अन्न और मीलों में गन्ना ढोने के लिए आवश्यक थे।

३—अब खेती के लिए बैलों के स्थान में ट्रेक्टर, मण्डियों में अन्न और मीलों में गन्ना ढोने के लिए भैसा गाड़ी तथा छोटी-छोटी बारातें ढोने का काम

भी भैंसे से ही लिया जाता है। ऐसी दशा में गौमाता के "जाये" बैल बेकार।

४—और अब तो दूध के लिए भी कोई नया अविष्कार हुआ है, पता नहीं वह बोतल में सफेद-सफेद किसका दूध है? हाँ दिल्ली में सभी दुग्ध विक्रेताओं की दुकान पर आप बोर्ड लगे देखेंगे कि यहाँ पर "गाय का दूध बिकता है।" यदि यह बोर्ड ठीक है तो दिल्ली में लाखों गऊएँ होनी चाहिए किन्तु.........।

आर्य (हिन्दू) होने के नाते गौवंश की रक्षा और वृद्धि चाहता हूँ और वह भी गौ के प्रति भक्ति के कारण नहीं अपितु गौ के पवित्र दुग्ध के लिए, उसके बच्चों को उसी पुराने काम में लगाने के लिए, गौवंश के गोबर की खाद से उत्पन्न निरोगी अन्न, चीनी, फल, सब्जि आदि प्राप्त करने के लिए। सारे विश्व के चिकित्सक डाक्टर हकीम और वैद्यों की मान्यता के अनुसार गौ का बुद्धि वर्धक सुपाचक दूध, घी, मक्खन, दही और छाछ पीने के लिए। फिर मरने के पश्चात् पादत्राण की पूर्त्यर्थ चर्म के लिए।

गौवंश की रक्षा और वृद्धि के उपाय

वैसे तो हर नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह या तो दूध पीना छोड़ दें या फिर जैसे भी हो गौवंश की रक्षा और वृद्धि के लिए कुछ-न-कुछ करें।

किन्तु गौवंश वृद्धि का कार्य कृषक पर न छोड़कर देश के बड़े-बड़े उद्योग-पतियों को करना चाहिए और सरकार को उन्हें पूरा सहयोग देना चाहिए।

एक उद्योगपति जिसने ५-१० करोड़ रुपये नाना प्रकार के उद्योगों में लगाये हुए हैं—वह व्यापारिक ढंग पर दो चार लाख रुपये से गोसदन चला सकता है। उसमें दूध का उत्पादन भारी मात्रा में हो सकता है, वह सस्ता दूध, मक्खन दे सकता है। खाद के लिए गोबर किसानों को सस्ता दे सकता है। मरी हुई गौ के चमड़े और हड्डी भी धन दे सकती है, गौ के नवजात शिशु तो गौवंश की वृद्धि करते ही हैं। वह उद्योगपति लाखों रुपये का चारा भूसा खल बिनौला आदि वर्ष भर के लिए भर सकता है। चीनी मिल मालिक के पास तो गन्ने के गौले खोई आदि के भण्डार होते हैं जो चारे के काम आते हैं।

इस प्रकार के गोसदन सरकारी सहायता से उद्योगपति देश भर में हजारों

खोल सकते हैं। यदि सरकार गोसदन के लिए २-४ करोड़ रुपया उद्योगपतियों को २ वर्ष तक बिना ब्याज के ऋण रूप में दे देवे तो देश भर में सर्वत्र गौए ही गौओं के दर्शन होंगे, दूध की नहरें और घी के तालाब भरे नजर आयेंगे।

ऐसा करने में सरकार को भारी यश मिलेगा, उद्योगपतियों के उद्योग-धन्धों में वृद्धि होगी, लाखों परिवारों को धन्धा मिलेगा, जनता को पवित्र शुद्ध घी और दूध सस्ता मिलेगा जब ऐसा सरकार की सहायता से व्यापक रूप से गौवंश का पालन पोषण होगा तो फिर गो भक्तों को न आन्दोलन करने पड़ेंगे न जलसे, जलूस निकलेंगे फिर तो नेता भी चुप और जनता भी चुप।

गौवंश वृद्धि में योगदान के लिए मैं हिन्दू को ही नहीं—भारत की प्रत्येक जातियों को योग देने की बात मानता हूँ और वह योग दे भी सकते हैं।

मैं अपने पर बीती एक घटना भी बताना चाहता हूँ वह यह कि एक बार मेरी भैंस को प्रसव के समय बड़ा कष्ट हुआ। बच्चे के साथ बच्चेदानी भी बाहर आने लगी। बड़ी भाग-दौड़ की पर सब व्यर्थ। एक मेरा मित्र एक कसाई के युवक को बुला लाया, उसने देखा और आधा किलो सरसों में अपने दोनों हाथ लथपथ करके एक हाथ से बच्चेदानी को अन्दर दबाया और दूसरे हाथ से बच्चे को बाहर निकाल लिया। भैंस और बच्चा दोनों बच गये। उस कसाई युवक को एक रुपया और २॥ सेर गुड़ की भेली भेंट की, वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

मैंने कुछ देर तक उससे बात चीत में कहा कि आप लोग़ तो पशु के जीवन की रक्षा पालन और पोषण बहुत अच्छे ढंग से कर सकते हो तो फिर पशुओं की गर्दन पर छुरी क्यों चलाते हो।

उसने कहा कि अगर हमें पशु-पालन करने का काम मिले तो फिर हम पशु काटने का काम क्यों करें। आप हमसे पशु-पालन, संवर्धन और रक्षण का कार्य लीजिए और फिर देखिए कि हम सच्चे पशु रक्षक साबित हो सकते हैं या नहीं। बात ठीक थी उस कसाई युवक की। तब से मुझे विश्वास है कि यदि हमारी सरकार इस काम में मुसलमानों को भी भागीदार कर लें तो उन्हें पवित्र धन्धा मिलेगा, गौ आदि पशुवध बन्द होगा, देश खुशहाल होगा। और घी दूध की बहुतायत होने से अन्न की समस्या का भी समाधान होगा।

यदि सरकार ने, जनता ने, उद्योगपतियों ने इस पर ध्यान न दिया तो फिर महर्षि दयानन्द सरस्वती के वह वचन सार्थक सिद्ध होंगे जो उन्होंने गौकरुणानिधि में लिखे हैं कि—गौ आदि पशुओं का नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाया करता है।

संस्कृत वाङ्मय का ह्रास

संस्कृत आर्य जाति की ही नहीं अपितु मानव जाति की सांस्कृतिक जननी है। इस सम्बन्ध में अधिक क्या लिखूं। स्वराज्य के पश्चात् संस्कृत शिक्षा प्रचार-प्रसार के स्रोत सूख गए या बन्द हो गए। मुगलकाल में भी संस्कृत किसी प्रकार जीवित बच निकली किन्तु आज की दशा अत्यन्त चिन्तनीय है।

संस्कृत के सम्बन्ध में महामहिम राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी ने २२ नवम्बर १९५२ में अपने एक भाषण में जो कहा था वह संस्कृत प्रेमियों की आँखें खोलने वाली और मनन करने योग्य है। राष्ट्रपति महोदय कहते हैं:—

सांस्कृतिक दृष्टि से संस्कृत के अध्ययन के महत्व के सम्बन्ध में विदेशी विद्वानों और शासकों तक ने भी किसी प्रकार की शंका नहीं की। जिस प्रकार आज अनेकों देशों के विद्यार्थी शिक्षा के लिए यूरोप या अमेरिका जाते हैं, उसी प्रकार संस्कृत और उसका वाङ्मय पढ़ने के लिए अन्य देशों से विद्या—जिज्ञासु हमारे देश में सहस्राब्दियों तक आते रहे। इनमें चीनी थे, यूनानी थे, फारसी थे, अरबी थे और स्वर्ण दीपमाला के वासी थे। उस युग में संस्कृत, सभ्यता के रहस्यों को पाने की एक कुंजी समझी जाती थी और इसलिए भारत के विद्वानों को विदेशों में आमन्त्रित किया जाता था जिससे वहाँ के लोगों को संस्कृत में संचित ज्ञान का उनकी भाषा में ज्ञान करायें।······

मुझे इस बात का खेद है कि इस दिशा में जैसी व्यवस्था होनी चाहिए, जितना धन, समय और शक्ति लगनी चाहिए, वैसी न तो व्यवस्था है और न उतना धन, समय और शक्ति हम लगा रहे हैं।

एक समय था जब राज्य और समाज, दोनों ही संस्कृत के अध्ययन का पोषण करते थे। राजदरबार में संस्कृत पण्डितों और कवियों का बहुत आदर-सम्मान

होता था और राजा तथा सामन्तगण उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्याप्त धेनु, धन और धान्य देते थे।......

मुझे कभी-कभी यह भय होने लगता है कि सम्भवतः स्वतन्त्र भारत में संस्कृत अध्ययन की परम्परा कहीं समाप्त न हो जाए। आज संस्कृत-विद्वानों की जो अवस्था है, वह वास्तव में शोचनीय है। अभी राज्य ने संस्कृत-अध्ययन को प्रश्रय देने का भार अपने सिर पर नहीं लिया है।......

बड़ी-बड़ी रियासतें और जमींदारियाँ जो इस काम में बहुत व्यय किया करती थीं, अब नहीं रही और उनके स्थान पर अभी तक कोई नया प्रबन्ध नहीं हो पाया है। फल यह हो रहा है कि संस्कृत के शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ही की दुर्दशा हो रही है। दूसरे शब्दों में आज समाज से आने वाली दान-सरिता लगभग सूख गई है।......

अतीत में संस्कृत पाठशालाओं को दानशील रियासतों, जमीदारों और सेठ-साहूकारों से आवश्यक वित्तिय सहायता मिल जाया करती थी। कुछ तो उनके लिए दान की गई जमींदारियों की आय के सहारे चल रही थीं, किन्तु अब तो हमने जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन (का निर्णय) कर लिया है।......

मैं समझता हूँ कि इस दिशा में राज्य सरकारें पहल कर सकती हैं। अब समय आ गया है कि वे संस्कृत-अध्ययन के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता का प्रबन्ध करें। जब समाज के सब सम्पत्ति-साधनों को वे अपने हाथों में ले रही हैं तो कोई कारण नहीं कि वे समाज के उत्तरदायित्वों को भी क्यों न वहन करें.. ।

(भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण-पृ० ११५)

राष्ट्रपति महोदय ने अपनी विचारधारा में संस्कृत वाङ्मय की महानता और प्रचार की आवश्यकता पर बल देते हुए उसके प्रसार के स्रोत सूखने पर गहरी चिन्ता प्रकट की है। साथ ही राज्य सरकारों पर इसके संरक्षण का उत्तरदायित्व सौंपा है।

हिन्दू जाति के ह्रास के साथ-साथ हिन्दू का संस्कृत वाङ्मय कैसे जीवित रहेगा यही चिन्ता है।

नेताओं की नीति और भाषण

स्वराज्य के बाद के नेताओं के भाषणों ने तो जनता को भारी गुमराह किया है। नेताओं के भाषण प्रायः ऐसे ही होते हैं जैसे चौराहों पर खड़े हुए दवा वेचने वालों के भाषण। आज के भाषण ही हैं जिन्होंने देश में सारी मुसीवतें पैदा की हैं। कृपया विचार करें—(१) एक नेता किसान के लिए गला फाड़ता हुआ कहता है कि इनके माल का मोल पूरा नहीं मिल रहा। परिणाम यह होता है कि माल का भाव महंगा होता है फिर वही नेता गरीब मजदूरों में आँसू वहाता है कि तुम महंगाई की चक्की में पीसे जा रहे हो। वही नेता व्यापारियों के सामने उनसे हमदर्दी, उनके पीछे उन्हें गालियाँ सुनाता है। कभी मील वालों की छाती पर सवार होता है, कभी उनसे भेंट-पूजा होने पर उनकी हाँ में हाँ मिलाने लगता है।

नेताओं को नेता कहूँ या नीलामकर्त्ता कहूँ। हर क्षेत्र में यह नीलामी जैसी बोली वोलते हैं। एक नेता किसान को कहता है कि मुझे वोट दो मैं तुम्हें वह दसगुणा वापिस दिला दूंगा जो तुम्हारी जेव से जमींदारों को दिलाया गया था।

एक नेता कहता है किसान भाइयों मुझे राय दो मैं २॥ एकड़ पर मालगुज़ारी माफ करा दूंगा तो दूसरा नेता पाँच एकड़ पर मालगुजारी माफ कराने की घोषणा करता है। आज राष्ट्र का निर्माण नहीं—नीलामी की जाती है।

एक वार राजस्थान के नेताओं को गुड़ की सनक सवार हुई। गुड़ के व्यापारियों को आँख दिखाकर महंगी के नाम पर उत्तरप्रदेश से गुड़ का कारोबार नेता लोगों ने एक बोर्ड वनाकर अपने हाथों में ले लिया। इस वोर्ड ने कितना गुड़ खरीदा, कितना कमाया, जनता को कितनी राहत पहुँचाई इसे मैं लिखना नहीं चाहता केवल इतना ही हुआ कि जैसे रोटी खाते-खाते भूख बन्द हो जाती है वैसे ही कुछ समय में नेताओं का पेट भर गया, और गुड़ का सरकारी व्यापार ठप्प हो गया। इसी प्रकार अन्य कारोबार और उद्योग-धन्धों की बात है। दूसरे लोग करोड़ों, अरवों के व्यापार करें और नेता जी देखते रहें—यह कैसे हो सकता है।

गरीबों के नाम पर, मजदूरों के नाम पर और महंगी के नाम पर नोट और वोट प्राप्त करना ही आज का सरल व्यापार है।

मुझे याद है—स्वर्गीय श्री पं० गोविन्दवल्लभ पंत का वह मार्मिक भाषण जो उन्होंने स्वराज्य से पहले शामली और कांधले में दिये थे। उन्होंने बड़े क्रोध में भरकर कहा था कि—

इस जालिम अंग्रेजी हकूमत ने देश को कन्ट्रोल के चक्कर में ऐसा फंसा दिया है जिससे बाजार में न कपड़ा मिलता है और न अन्न।

पंत जी ने यह भी कहा था कि मेरा विश्वास है यदि आज मिट्टी पर कन्ट्रोल हो जाए तो हाथ धोने और बर्तन मांजने को मिट्टी भी नसीब नहीं होगी।

माननीय पंत जी के भाषण क्या थे—जनता के हृदय को छूने वाले चुम्बक थे। जनता उस दिन की प्रतीक्षा में थी कि जिस दिन देश से अंग्रेज भगेंगे तब कन्ट्रोल के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, फिर सभी वस्तुएँ सुलभ और सस्ती होंगी।

परमात्मा की कृपा हुई, उस समय नेताओं के त्याग तप से अंग्रेज तो भाग गए किन्तु देश के त्यागी तपस्वी नेता भी धीरे-धीरे चलते चले, केवल उनके शब्द कागजों या किसी के कानों में ही रह गए।

आजादी के पहले वर्ष से और आज के दिन तक के सभी वस्तुओं के भाव को ब्यौरे वार यहाँ क्या लिखूँ—सारा देश जानता है। केवल इतना लिखे देता हूँ कि सन् १९५५ में मैंने दिल्ली में १६ रुपये के एक मन चावल, एक रुपये की पाँच सेर उड़द, अरहर की दाल, खरीदी थी किन्तु आज दाल-चावल-घी किस भाव हैं, किसी से छुपा नहीं है। हाँ, एक बात याद दिलाये देता हूँ कि कपड़े का कन्ट्रोल टूटने से देश भर की दुकानों में कपड़ा भरा पड़ा है, स्वर्गीय किदवई द्वारा अन्न का कन्ट्रोल खतम कर दिया था तब जिधर देखो अन्न ही अन्न दिखाई देता था तब न कपड़े की हा-हाकार थी और न खाद्य-वस्तुओं की।

मेरे देश के नेता और शासक खाद्य-वस्तुओं का कन्ट्रोल समाप्त करके देखें तो सही—खाद्य की समस्या ही नहीं रहेगी।

कन्ट्रोल से तो विक्रेता और उपभोक्ता दोनों में आपाधापी मचती है। विक्रेता तो लाभ के लिए बिक्री से हाथ रोकता है किन्तु—उपभोक्ता की घबराहट भी आपाधापी उत्पन्न करती है वह चाहता है कि जैसे भी हो तैसे मंहगा मिले या सस्ता, खाने का सामान घर में भर लिया जाय। साथ ही राशन कार्ड के घोड़े

पर भी सवार रहें। पता नहीं कल को मिले या न मिले। भारी संख्या में राशन कार्ड भी बोगस बनते रहते हैं—ऐसा आये दिन समाचार पत्रों में छपता है।

मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि खाने-पीने की वस्तुओं का बाजार बिलकुल खुला छोड़ दिया जाय तो आप देखेंगे कि न दुकानदार माल छुपायेगा और न उपभोक्ता संग्रह करने की सोचेगा। मेरा यह भी अनुभव है और आप भी विचारने की कृपा करें कि एक दुकानदार माल को कब तक छुपायेगा।

गेहूँ को ही लीजिए—६ मास बाद उसमें कीड़ा लगना शुरू हो जाएगा फिर सम्पत्ति को ब्याज रूपी कीड़ा भी चाट जाएगा तब व्यापारी में कहाँ इतनी शक्ति कि वह माल भी खराब होने दे और ब्याज-भाड़े का घाटा भी सहन करें।

व्यापारी को तो बेचने में ही आनन्द आता है—रोकने या छुपाने में नहीं। मारवाड़ी व्यापारियों में कहावत है—"बिक्री जीत सी" रोकने और छुपाने का तो आविष्कार ही हुआ है—कन्ट्रोल से। कन्ट्रोल तोड़ दीजिए फिर देखिए, कौन छुपाता है। जनता को राहत मिलती है या आफत। आफत मिलती दीखे तो फिर कलम की नोक से कन्ट्रोल कर लेना, कौन मना करता है।

यदि कन्ट्रोल की तह में कोई राजनीति या अर्थनीति काम कर रही हो तो उसे नीतिज्ञ ही जाने-मेरी समझ में तो इतना ही आता है कि बहुसंख्यक हिन्दू जाति के हाथ में व्यापार और उद्योग-धन्धें हैं—आर्थिक दृष्टि से हिन्दुओं को कमजोर करने में भी राजनीति का एक अङ्ग हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

हिन्दू-मुसलिम कानून

आये दिन सरकार घोषणा करती रहती है कि मुसलमानों के कानूनों में सरकार हस्तक्षेप नहीं करेगी।

मैं पूछता हूँ कि फिर सरकार हिन्दुओं के कानूनों में क्यों हस्तक्षेप करती है—हिन्दूकोड क्यों बनाया गया।

यदि सरकार अपने को हिन्दू सरकार मानती है तो उसे हिन्दूकोड बनाने का अधिकार है। और मुसलिम कानून में हाथ डालने का अधिकार नहीं। यदि यह ठीक है तो फिर सेक्यूलर सरकार कहाँ रही।

अत: मेरा निवेदन है कि सरकार को सभी नागरिकों के साथ समानता और न्याय के साथ व्यवहार करना चाहिए। यदि हिन्दू के लिए हिन्दूकोड बनाना न्यायसंगत है तो इस न्याय के प्रसाद से मुसलमान को क्यों वंचित रखा जाता है।

हिन्दू-विवाह या बरबादी

हिन्दू के घर बरबाद हो रहे हैं—बेटी के विवाह के कारण। हिन्दू विवाह की पवित्रता का नाश हो रहा है—बेटे की बारात के साथ। हिन्दू बाराती बाजारों में नाचता फिरता है—शराबी बनकर। विवाह में पैसा बर्बाद कर रहा है, हिन्दू नाच-नाचकर। हिन्दू विवाह का भोज तो पूरा वाम-मार्ग है।

झूठा खाना, खड़े-खड़े खाना अपने आप दौड़-दौड़कर लप-लपाकर खाना ठीक वैसा है जैसा किसी के पास २० पशु हों, सबके लिए एक लम्बी खोर में खल बिनोले से तर कर भुस फैला है सारे पशु उसमें झपट-झपटकर खड़े-खड़े खाते रहते हैं, पेशाब करते और गोबर करते रहते हैं। आज के हिन्दू ने खड़े होकर खाना तो सीख लिया, खड़े-खड़े मूतने में भी हिन्दू माहिर हो गया किन्तु एक ही कसर बाकी है वह है—खड़े-खड़े हगना, सम्भव है यह भी रिवाज चल पड़े।

हिन्दू पहले भी थे, धनी भी थे, साधारण भी थे, निर्धन भी थे, उनकी बेटियाँ भी विवाही जाती थीं और बेटे भी। न गन्दगी थी, न भ्रष्टता थी, न धन की माँग थी, न शराबें पी-पी कर बाजों की धुन पर नाचने की धुन थी, न फोटो खिचते थे, न लड़की देखी जाती थी, न लड़की को बरातियों की लाईन में बैठकर खाना पड़ता था। तात्पर्य यह है कि यह सब कुछ नहीं होता था परन्तु फिर भी हिन्दू बेटे और बेटियों के आदरपूर्वक विवाह होते थे।

हिन्दू को बेटी के विवाह में बड़ी सुविधाएँ थीं। पापड़ बिरादरी बेलती थी, लड्डू के लिए चने की दाल सब मिल-जुलकर साफ करते थे, प्रत्येक बेटी के विवाह में कुछ रुपये न्यौते के नाम पर आते थे, दूध के घड़े बिरादरी भेजती थी, ऐसे अनेक प्रकार थे जिससे बेटी के विवाह में कुछ बोझ नहीं पड़ता था।

बेटे वाला दहेज नहीं माँगता था, धन के लिए हाथ नहीं पसारता था, वह तो अपने यश के लिए इस अवसर पर बूर बाँटता था, बखेर करता था,

गोशालाओं और आर्य समाज मन्दिरों तथा स्कूलों में; कमरे बनवाता था, विभिन्न संस्थाओं में दान देता था, अपने ग्राम की किसी भी जाति की बेटी को रुपया और मिठाई देता था और वह देवी भी अपने ग्रामीण भैया का नारियल और तिलक से स्वागत करती थी। ऐसा था—आज से ४०-५० वर्ष पहले का हिन्दू बेटे वाला, जो यह सब कुछ अपनी ही जेब से करता था। बेटी के बाप की जेब नहीं काटता था। इसी पवित्रता का परिणाम था कि सैकड़ों वर्षों में एक भी हिन्दू की बेटी और बेटे को कचहरी का दरवाजा देखना नहीं पड़ता था।

आज हिन्दू ऐसे कुकर्मों में फँस गया है जिससे हिन्दू घरानों की तीस-तीस वर्ष की बेटी माँ बाप की निर्धनता पर रो रही हैं या अग्नि में भस्म हो रही या जो किसी दुष्ट के फंदे में फँसकर कुल को कलंकित और अपने घृणित जीवन पर आँसू वहा रही है।

उच्च शिक्षित हिन्दू लड़कियों का या तो योग्य वर न मिलने से विवाह होना कठिन, विवाह हो भी गया तो किन्हीं कारणों से विवाह का पूरा पड़ना कठिन और अन्त में कभी लड़की कोर्ट में, कभी लड़का कोर्ट में लगातार धक्के खाते हैं।

मैं ऐसे अनेक हिन्दुओं को जानता हूँ जो बड़े शिक्षित, उनके बेटे-बेटी बाप से भी अधिक शिक्षित हैं किन्तु वह विवश हैं—अपने शिक्षित, बेटे-बेटियों के कुकर्मों पर। रोते रहते हैं, सिर धुनते हैं, बगल में फाईलें दबाकर कचहरियों में चक्कर काटते रहते हैं। उनका फैसला होता है अग्नि के बीच में या विष की प्याली में। मैं कहता हूँ—हिन्दू विवाह क्या हुआ, इनके सर्वनाश की दस्तावेज बन गई। पता नहीं—कितनी हिन्दू बेटियें आत्म—हत्या कर रही हैं, कितनों की हत्या की जा रही है और कितनी हिन्दू के मुंह पर कालख पोत कर विधर्मी के घर की शोभा बढ़ा रही है।

मैं सोचता हूँ कि ऐसी दशा में यह महान् हिन्दू जाति मरेगी या बचेगी! क्या? करेंगे आप इस पर विचार; बतायेंगे कोई नुसखा हिन्दू को, जिससे वह सम्मानपूर्वक जिन्दा रह सके।

[illegible]री बुराईयों का एक घर—सिनेमा

[illegible] के सीनेमाओं को मैं हिन्दू के लिए श्राप मानता हूँ। इसके अभिनेता
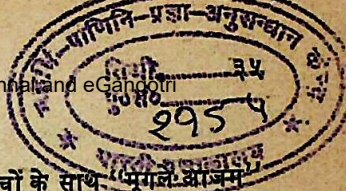
और अभिनेत्रियों के लिए वरदान।

आज के हिन्दू माँ-बाप अपने युवक—युवती बच्चों के साथ "मुगले आजम" देखते हैं या और कोई। मेरा निश्चित मत है कि सिनेमा देखने के बाद बच्चों के चाल-चलन जरूर बिगड़ेंगे। कतल, डाकेजनी, लूट-खसोट, जेब-कतरी, व्यभिचार बलात्कार और नाना प्रकार के फैंसन सिनेमा ने ही सिखाए हैं। सीनेमाओं से ही नर-नारी का चारित्रिक पतन हो रहा है, अभिनेता और अभिनेत्री बनने की धुन में युवक और युवतियें सीधे बम्बई की ओर भाग रही हैं। वहाँ से वह सीता और राम बनकर निकलतीं हैं या राक्षस और राक्षसी बनकर यह आप आये दिन देखते होंगे।

मैं चाहता हूँ कि या तो सिनेमा में १ प्रतिशत भी गन्दगी न रहे—यदि ऐसा सम्भव नहीं है तो, यह तो सम्भव है कि हर हिन्दू नर-नारी, युवक-युवती सिनेमा घर के आगे से भी निकलना बन्द कर दें। यदि हिन्दू ऐसा करेगा तभी सिनेमा या तो पवित्र होंगे या उनमें ताले पड़ेंगे। साथ ही यह भी लिख दूँ कि सीनेमाओं के एजेन्ट हैं—रेडियो वाले जो प्रतिदिन सीनेमाओं के गन्दे से गन्दे गीत रिकार्ड जनता की फरमाईश का नाम लेकर सुनाते रहते हैं। ऐसे ही विवाहों के अवसर पर लाऊडस्पीकर द्वारा गन्दे से गन्दे सीनेमाओं के रिकार्ड बजाए जाते हैं और हम बेशर्मी से सुनते रहते हैं। जरा आप अपनी छाती पर हाथ रखकर मन से पूछें तो सही कि जब बेटे-बेटी ने सिनेमा का यह रिकार्ड—

जब प्यार किया तो डरना क्या

सुन लिया तो फिर उन बेटे-बेटियों के मन क्या कहेंगें, क्या करेंगे, या तो लड़का किसी की लड़की को ले भागेगा या लड़की माँ-बाप को अंगूठा दिखाकर कहने लगेगी—

जब प्यार किया तो डरना क्या

मैं अधिक कुछ न लिखकर हिन्दू नेताओं, हिन्दू शुभ-चिन्तकों और हिन्दू नर-नारियों से नत-मस्तक निवेदन करूँगा कि हिन्दू जाति को विनाश से बच[illegible] गन्दगी से बचाओ, खोटे चाल-चलन से बचाओ और सादगी [illegible] और आचार व्यवहार का ऊँचा आर्य आदर्श का मार्ग [illegible] में पहुँचाओ तभी हिन्दू बचेगा अन्यथा सर्वनाश में स[illegible]

अन्त में महर्षि दयानन्द सरस्वती के निम्न बचनों का भी मनन करें—

“जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब (राज्य) नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।” (सत्यार्थप्रकाश)

“इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान्—लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत-सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है, तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। (सत्यार्थप्रकाश)

खान पान में भ्रष्ट—हिन्दू

आज सारे देश में हिन्दू बड़ी तेजी से शराबी और मांसाहारी बनता जा रहा है। मुर्गी, मछली और अंडों का भारी मात्रा में उत्पादन हिन्दू ही करने लगा है और भक्षण भी हिन्दू ही करता है। इस मांस भक्षण की आदत के कारण हिन्दू युवक गो-मांस से भी परहेज नहीं करता। राष्ट्र के रेडियो तो अंडों का अन्धाधुन्ध प्रसारण कर रहे हैं। मांसाहार का ऐसा भयंकर प्रचार तो अंग्रेजी राजकाल में भी नहीं हुआ था। मांसाहार के साथ शराब तो आवश्यक है ही। गाँधीजी का नाम लेनेवाली सरकार आये दिन शराब के कारखाने और मांस के बूचड़ खाने खोलने को प्रोत्साहन दे रही है।

जिस महात्मा गाँधी ने कांग्रेस के माध्यम से विदेशी शराबी सरकार से शराब बन्दी के लिए लाखों हिन्दू नर-नारियों को जेल भिजवाया था उसकी उत्तराधिकारिणी सरकार द्वारा शराब और मांस का भयंकर प्रसार कराना, गाँधी जी के सिद्धान्तों के साथ खिलवाड़, राष्ट्र के साथ धोखा और स्वयं कांग्रेस का अपने विचारों पर हड़ताल फेरना है। आश्चर्य तो यह है कि जिन राज्यों में ...न्दी थी वहाँ शराब बन्दी भी बन्द की जा रही है।

...नन्द सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास में लिखते हैं कि—

“...को मद्य पीने का नाम भी नहीं लेना चाहिए।”

...वचनों पर ध्यान दें—

"हे मांसाहारियों ! तुम लोगों को जब कुछ काल के पश्चात् पशु-पक्षी नहीं मिलेंगे तब मनुष्यों का भी मांस छोड़ोगे वा नहीं।"

महात्मा गांधी जी तो यहाँ तक लिखते हैं कि—"खाद्याखाद्य के नियम अवश्य हैं। जो बाह्य शौचादिक नियमों का पालन नहीं करते, उनके हाथ का स्पर्श किया हुआ अन्न या पानी ग्रहण न करें।" (हरिजन सेवक १२-१०-३४)

क्या महान् आर्य (हिन्दू) जाति मांसाहार और मद्यपान के घृणित मार्ग पर चलने से बचेगी और अन्यों को बचावेगी।

आर्य (हिन्दू) क्या करें ?

आज की राजनीति को न आर्य शब्द से और न हिन्दू शब्द से प्रभावित कर सकते हैं। क्योंकि कतिपय दलों ने इन शब्दों के लिए दूषित वातावरण बना दिया है। मुसलमान तो मुसलमान शब्द से सरकार को प्रभावित कर सकते हैं, राष्ट्रीयता का सर्टिफिकेट प्राप्त कर सकते हैं किन्तु हिन्दू के लिए मुश्किल है। लगभग सभी दलों के नेता हिन्दू के धन पर हिन्दू के वोट के बल पर पनपते हैं किन्तु हिन्दू जाति संस्कृति और सभ्यता का कोई प्रश्न धारा सभाओं में उपस्थित होता है तो विभिन्न दलवादी हिन्दू-नामधारी चुप्पी साधते हैं या विरोध करते या चुप रहते हैं। गौ के मामले को ही लीजिये—जैसे इन्हें लकवा मार गया हो। मेरे विचार में कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द और गांधी को अपना नेता मानकर इनके त्यागवाद पर आधारित राष्ट्र रक्षा, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र की समृद्धि के लिए एक जुटकर होकर त्यागवादी बल बनाकर सरकार और राजनीतिक दलों को निम्न सुझावों से प्रभावित करना चाहिएं और ऐसा प्रचण्ड आन्दोलन करना चाहिए जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र के निवासी प्रभावित हो सकें।

१—किसी भी प्रकार की हड़तालें बन्द हों।

२—सरकारी और गैर-सरकारी सम्पत्तियों को क्षति पहुंचाने वाले नेताओं को कठोर दण्ड दिया जाए।

३—जैसे मनिआर्डर गुम होने पर डाकखाना, पारसल गुम होने पर रेल और रेलें

लड़ने पर जखमियों की क्षतिपूर्ति सरकार करती है वैसे ही किसी भी नागरिक की चोरी, जेब कतरी, डाका, बलात्कार और मृत्यु से होने वाली क्षति की पूर्ति करने का सरकार उत्तरदायित्व स्वीकार करे।

४—शराब और मांस के प्रचार और उत्पादन वृद्धि को कम करें।

५—किसान को अन्न उत्पादन के लिए पाँच वर्ष आबपाशी फ्री कर दी जाय तो अन्न की समस्या स्वयं हल हो जावेगी।

६—किसान को अन्न बोने के समय ६ मास तक बिना ब्याज के कर्ज दिया जाय।

७—सभी प्रकार के कन्ट्रोल समाप्त कर दिए जाएँ।

८—खाने के लिए अन्न उत्पादन को प्राथमिकता दी जाय। शराब के लिए जौं और सिगरेट के लिए तम्बाकू का उत्पादन बन्द किया जाय।

९—केन्द्र में और राज्यों में मन्त्रिगण कम किए जाएँ।

१०—राज्यपाल के साथ जैसे उपराज्यपाल नहीं है ऐसे ही राष्ट्रपति के साथ उप-राष्ट्रपति का क्या औचित्य है। अनावश्यक खर्च है।

११—मुख्य मन्त्री और प्रधान मन्त्री जितना वेतन राष्ट्रपति और राज्यपाल का होना चाहिए। अधिक नहीं।

१२—बलात्कार और अपहरण में कठोर-से-कठोर दण्ड दिया जाय।

१३—सीनेमाओं में १ प्रतिशत भी गन्दगी नहीं होनी चाहिए।

१४—जनता द्वारा चुने हुए सदस्यों को—चाहे वे राजसभा, लोकसभा, विधान-सभा आदि कहीं के भी हों—उपस्थिति भत्ता ही दिया जाना चाहिए, वेतन तथा अन्य सुविधायें समाप्त कर देनी चाहिए।

१५—चुनाव में मतदाता और मत लेता का भी कोई मापदण्ड होना चाहिए।

१६—चुनाव सीमित कर देने चाहिए।

१७—राज्यों द्वारा प्रचारित लाटरी जुआ ही है। लाखों का पैसा एक की जेब में जाता है। यह तो जुआ, सट्टा और फाटका ही है जिसे सरकार ने व्यापारियों
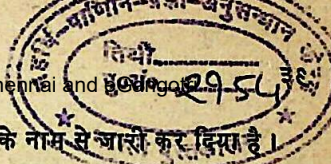
से बन्द कराया हुआ है और स्वयं लाटरी के नाम से जारी कर दिया है।

१८—यदि नेताओं और सरकार की दृष्टि में लाटरी भाग्य आजमाने का साधन हैं तो कृपा करके प्रत्याशियों का चुनाव लाटरी द्वारा कराकर उन्हें भाग्य आजमाने का अवसर दें। फिर न वोटर मारे-मारे फिरेंगे, न सरकार झंझट में पड़ेगी। एक सीट पर जितने प्रत्याशी खड़े हों लाटरी के द्वारा उनमें से एक चुन लिया जाय।

१९—यदि ईमानदारी से हिन्दू और सरकार गो संवर्धन करना चाहती है तो स्थान-स्थान पर सरकार द्वारा बड़े-बड़े उद्योगपतियों से गो दुग्ध उत्पादन केन्द्र खुलवाने चाहिए।

२०—परिवार नियोजन विभाग समाप्त कर देना चाहिए। कारण यह है कि हमारी इतनी-सी ही विशेषता है कि हम संख्या में संसार में दूसरे नम्बर पर हैं। वैसे तो हम धन में, विज्ञान में परमुखापेक्षी है। परिवार नियोजन से अपनी एक विशेषता को भी क्यों खो बैठे।

२१—जो मांसाहारी और अण्डे भक्षी हैं उनके लिए घी और अन्न का राशन कम करना चाहिए।

२२—जो शराबी हों उनसे दूध बचाना चाहिए। यह न्याय नहीं कि शराबी दूध भी पीं जाय और दूसरे दूध से वंचित। मांसाहारी मांस भी खा जाय, अंडे डकार जाय, साथ ही दूध-फल और अन्न भी। सरकारी प्रचार हैं कि एक अण्डे में आधा किलो दूध की शक्ति है। ऐसी दशा में अण्डे वाले से दूध बचाना चाहिए। ताकि दूसरों को दूध मिले। न्याय के आधार पर इसपर विचार करना चाहिए।

२३—विदेशों से बहुत ही आवश्यक वस्तु मंगानी चाहिए। अनावश्यक नहीं।

२४—सरकार योजनायें कम करें, आवश्यकतायें कम करें, खर्चे कम करें, सैर-सपाटे कम करें किन्तु विदेशी कर्ज लेना बिलकुल कम करें अच्छा तो यही है कि कर्ज लेने का नाम ही न लें।

२५—राष्ट्र को त्यागवाद, सादगी, चरित्रवान, बनाने की योजना की जाय। बात तो सैकड़ों हैं जो समय-समय पर प्रस्तुत की जाएगी।

चूंकि मैं आर्य (हिन्दू) हूं इसलिए मैं कहता
मृत्यु के वारन्ट पर हस्ताक्षर न करके जिंदा रहने क
नाश के मार्ग पर तो जा ही रहे हैं। "शिव

सुन्दर और सस्ता प्र

(एक-एक पुस्तक पढ़ने यं

१. व्यवहार भानु (महर्षि कृत)
२. आर्याभिविनय (महर्षि कृत) सुन्दर प्ला — १ रु० २५ पै० स०
३. आर्य समाज का प्रवेश पत्र — १ रु० [illegible] पै०
४. आर्य युवकों के बढ़ते कदम (१०५ चित्रों सहित) — ५ पै०
५. वेद और विवाह (महात्मा गांधी) — २५ पै०
६. महान् हिन्दू जाति-विनाश के मार्ग पर (चतुरसेन) — १५ रु०
७. दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य (कविरत्न पं० अखिलानन्द) — १२ रु०
८. शुक्रनीति (हिन्दी अनुवाद सहित) — १ रु० २५ पै०
९. वेद पाठ (महर्षि कृत ग्रन्थों से) — २ रु० ५० पै०
१०. सत्यार्थप्रकाश (सार्वदेशिक सभा) — १ रु०
११. आर्य व्यवहार डायरी (प्रेस में) — ५० पै०
१२. चाणक्य सूत्र (प्रेस में) — १ रु० २५ पै०
१३. विदुरनीति — ५० पै०
१४. भरथरीनीति — १० रु० ५० पै० सै०
१५. दैनिक यज्ञ प्रकाश — २० पै०
१६. शिवाजी को गुरु रामदास की राजनीति — ४० पै०
१७. नरक की रिपोर्ट (चतुरसेन) — ५० पै०
१८. स्वर्ग में हड़ताल — ८० पै०
१९. गरीबों की कहानी अमीरों की जबानी — १० पै०
२०. स्वर्ग में महात्मा गांधी की प्रेस कान्फ्रेंस

रघु कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा गोयल प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा दिल्ली-३२ में मुद्रित